

रो-रो द्रोपद तुम्हें पुकारें
कहाँ दिये बनवारी ३३३३३

जा रही लाज हमारी

मेरे भैया. जा रही लाज हमारी

बड़े-बड़े योद्धापति मेरे-बैठे शिष्य डुकाये
दुष्ट दुशासन साड़ी खींचे. ॥२॥

कौन जो लाज बचाये ॥२॥

देख कन्हैया-लाज बहिन की

न जाये गिरधारी ॥२॥

मेरे भैया. जा रही -----

वस्त्र विहीन-न होने पाऊं-इससे पहले आओ ॥२॥

सत्य नारायण तुम कहलाते

सत्य की लाज बचाओ ॥२॥

बे-वश. बहिना-तुम्हें पुकारे

सुन ले अरज मुरारी ॥२॥

मेरे भैया. जा रही -----

रज-पाट तो छोड़ कन्हैया आज पति मोहे हारे ॥2॥

पाँसे तुमने खूब बनाये

मामा शकुनि प्यारे ॥2॥

पार करे या डुबो धार में

मरुजी आज तुम्हारी ॥2॥

मेरे भैया- जा रही-----

व्यंजन थाल परोसें बैठी- रुक्मी समझन पाई ॥2॥

झटके पे झटके खाते हो-

व्यंजन रुचो कन्हवाई ॥2॥ बात समझन आई

झट "श्री बाबा श्री" धारये जहाँ बहिना

पहुँची अम्बर सारी ॥2॥

न-रो- न-रो- न-रो बहिना प्यारी ॥३॥

मेरे भैया- जा राये- दलिया बिहारी ॥३॥

जाऊँ तो पे- तो पे मैं बलिहारी ॥2॥

आज कन्हैया तेरी बहिना

अपनों बल रे हारी ॥2॥

मेरे भैया- जाऊँ मैं तो- पे बलिहारी..